

Written by कुमार सौवीर
Friday, 30 March 2018 06:21

: 00000 00 00000000000000 00000000 0000000000 00 0000000000 0000 0000000000 0000 00
00-0000000000 00 00 00000 000000000000 00 00 0000 0000000000 :00000 00 0000000000
0000000000 0000000 000000 00 00000 00 0000, 000000 00 0000 0000 00 :0000000000 0000 00000000
000000 000000 00, 00 00 000000000000000000 000000 00 00 0000000000 00 0000000000 00 :

000000 000000



00000 : प्रबंधकों के मैनेजमेंट की दुनिया में आम तौर पर बेहद कठिन-क्लिष्ट ट और केवल आर्थिकबोझा लादने की मशीन के तौर पर ही देखा और समझा जाता है। जहां की हर डगर हर कदम पर रूखी और केवल कम से कम रखने वाली शर्तें ही बखिरी होती हैं। पथरीला रास्ते ता केवल भौतिक और आर्थिक उपलब्धियों तक ही समिटा रहता है, जैसे कोई खच् चर-घोड़ा जिसकी आंख के केवल सीध पर ही रखने के लिए कखास पर्दा लगा दिया जाता है। ऐसे घोड़ों-खच् चरों की जनि दगी इससे ज् यादा न कुछ देख सकती है, न समझ सकती है, और न ही कुछ कर सकती है।

मगर ऐसी भीड़ में अचानक जब कोई गजब धावक कऐसी डगर को तोड़ कर क अनोखे मानवीय आयामों को मजबूत करने की लाजवाब केशशि करता है, तो वाकई कमाल हो जाता है। खास तौर पर तब, जब यह धावक सहज-सरल और मानवीय तन् तुओं की जमीन पर अपनी शक्ति-दीक्षा की नींव बुनने जा रहा हो। पुणे के समि बोयससि प्रबंध संस् थान में बीते दिनों यही हुआ। यहां पढ़ कर नक्लने जा रहे क नव-प्रबंधकने जीवन को कुछ इस तरह समझा और उसे सार्वजनिक तौर पर प्रस् तुत किया, क सुनने-देखने वाले लोग दंग हो गये। उनके आंखें गीली हो गयीं।

उस घटना क जक् किया है क वरिष् ठ पत्रकर दनिश जुआल ने। अपनी पत्रकरता में करीब साढ़े तीन दशक की पारी खेलने के बाद हाल ही अमर उजाला से सेवानिवृत् त दनिश जुआल ने अपने बेटे के शब् दों को जिस तरह प्रस् तुत किया है, वह लाजवाब और बेहद भावुक भी है। जुआल के बेटे भरत के इस स् व-अनुभूत शब् दों ने जनि भावों की प्रवाह-धारा पर वहां मौजूद लोगों को झक्झोर दिया। पुणे के समि बोयससि प्रबंध संस् थान की स् टेपिग आउट सेरेमनी में भरत ने जो बोला, वह अनुकरणीय तो है ही, समाज के प्रति उसकी जीवन की प्राप्ति और उसके सामाजिक प्रतिबद्धता क प्रमाण भी है। कहने की जरूरत नहीं क भरत ने अपने भाषण में जो कुछ भी बोला, उससे समझा जा सकता है क हमारे बच् चे कसी शुष् क प्रबंध की ठोस-नरिजीव ईट मात्र नहीं है, बल्क जीवन में मानवीय क्षेत्र में खुद को कसी बेहद भावुक और सर्वाधिक महत् वपूर्ण नविश से ज् यादा बलशाली है। इससे साबित होता है क प्रबंध क्षेत्र में केवल कलेज ही नहीं, परिवारिक पाठशाला भी क बेहद अहम शक्शालय होता है, जहां क नया समीकरण और जीवन-शैली क तानाबाना बुना जा सकता है।

अपने अनुभवों के लेकर दनिश जुआल लिखते हैं क:- समि बोयससि पुणे में बेटे भरत की स् टेपिग आउट सेरेमनी में शामिल होने वाले हम अकेले पेरेंट्स थे। बेटे ने हमारे लिए भी तालियां पटिवा दीं।

Written by कुमर सौवीर
Friday, 30 March 2018 06:21

अपने बैच को रपिरेजेंट करने केलाँ भरत बाबू को मंच पर बोलने केलाँ बुलाया गयाँ जब उन्होंने अपनी 0 मबी0 की पढाई के सबककिनारे छो0 ते हु0 अपना नष्कर्ष दिया की संबंधों यानी रश्तों में नविश न किया तो क्या व्यवसाय किया, उनकेलाँ तालियां बजी0 उन्होने कहा की कैप्रस के दो कुत्तों लीरा और दीनार से भी उन्होने जीवन के अहम् सबक सीखे है, इन दोनों प्राणियों को उन्होने **silent teachers** कहा, मुझे उनकी बचपन में लखी डायरी के पन्ने याद आ ग0 0 यह सुनना मेरे लाँ अद्भुत और सुखद था0 सबसे अंत में जब उन्हें अपनी क्लास के बेस्ट स्टूडेंट की ट्रॉफी मिली तो पूरे हॉल ने तालियां बजाईं इस ुशी को शेयर करना तो बनता है भाईं

00000000000 00 000000 000000 00 000000 00 0000 0000000 00000 00 000000 000000 :-

[00000000](#)